Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 2

भ्रमरगीत से चयनित कुछ पद : सूरदास

जन्म - सन् 1483 ई.

मृत्यु- सन् 1563 ई.

सूरदास का जन्म**सन् 1483 ई.** दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव में हुआ था। रुनकता (आगरा) के गऊ घाट पर उनकी भेंट **महाप्रभु वल्लभाचार्य** से हुई उन्होंने सूरदास को वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया तथा भागवत कथा सुनाई। जिसके आधार पर कवि ने उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया सूरदास ने ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चित्रण किया है वे भक्ति, श्रृंगार एवं वात्सल्य के अनुपम कवि हैं।सूरदास की प्रमुख रचनाएँ तीन मानी जाती हैं **1. सूरसागर 2.सूर सारावली 3. साहित्य लहरी**। इनमें से **सूरसागर** इनकी अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ है। सूरदास अष्टछाप के शीर्ष कवि हैं। कृष्ण के लोकरंजक रूप को काव्य का आधार बनाकर उन्होंने जयदेव और विद्यापति की गीतपरम्परा को आगे बढ़ाया। सूरदास का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। सूरदासजी की **मृत्यु 1563** ई. में हुई। उनके बारे में सच ही कहा गया है।

सूर सूर, तुलसी ससि,
उडुगण केसवदास।
अबके कवि खद्योत सम,
जहँ तहँ करत प्रकास।।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.सूरदास की भक्ति मानी जाती है

(अ) सखा भाव की

(ब) दास्य भाव की

(स) माधुर्य भाव की

(द) कान्ता भाव की

उत्तर: (अ)

प्रश्न 2. सूरदास ने अँखियों को भूखी बताया है

(अ) प्राकृतिक सौन्दर्य की

(ब) सुरमा लगाने की

(स) नींद लेने की

(द) हरिदर्शन की

उत्तर:(द)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. उद्धव को गोपियों ने ऐसे कौन से प्रश्न किए कि उद्धव ठगा-सा रह गया?

उत्तर:गोपियों ने पूछा कि वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? उसके माता-पिता का नाम क्या है, पत्नी कौन है, दासी कौन है, कैसा रूप-रंग है, किसकी इच्छा करता है? इन प्रश्नों को सुनकर उद्धव ठगा-सा रह गया।

प्रश्न 2.हारिल पक्षी की क्या विशेषता है? बताइए।

उत्तर:हारिल पक्षी अपने पंजों में एक हरी लकड़ी दबाए रहता है, उसे छोड़ता नहीं, वह हमेशा हरी लकड़ी पर ही बैठता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.गोपियों को उद्धव का योग (जोग) सन्देश किसके समान लग रहा है?

उत्तर:गोपियों को उद्धव का योग सन्देश कड़वी ककड़ी के समान लग रहा है। गोपियाँ तो श्रीकृष्ण के साकार स्वरूप से प्रेम करती हैं। उद्धव उनकी भावनाओं को न समझकर उन्हें बार-बार योग

साधना करने को प्रेरित कर रहे हैं। श्रीकृष्ण को भूलकर निर्गुणनिराकार ईश्वर की आराधना गोपियों को तनिक भी नहीं सुहा रहा है। अतः उन्हें उद्धव का योग-उपदेश मन को कड़वी कर देने वाला लगता है।

प्रश्न 2.“मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना जाय पखारे।” पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर:इस पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है। कविता में जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाती है , वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस पंक्ति में यमुना के श्याम होने में मथुरावासियों कोनील के मटके से निकाल कर, यमुना में धोने की सम्भावना व्यक्त की गई है। अत: यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.सूरदास के पदों में वर्णित प्रेम भक्तिभावना का वर्णन कीजिए।

उत्तर: हमारी पाठ्यपुस्तक में कवि सूरदास रचित ‘भ्रमरगीत प्रसंग’ से कुछ पद संकलित हैं। इन पदों में श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने से दुखी गोपियों की भावनाओं का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। यह प्रसंग प्रेम और भक्ति भावना से ओत-प्रोत है।

उद्धव श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर ब्रज में आए हैं। कृष्णनेअपने वियोग में दुखी गोपियों के लिए योग साधना का सन्देश भिजवाया है। गोपियों को लगा था कि उनके प्रिय कृष्ण ने अवश्य ही उनके लिए कोई प्रेम भरा सन्देश भिजवाया होगा। किन्तु जब उन्होंने श्रीकृष्ण को भुलाकर योग और ज्ञान को अपनाने का सन्देश सुना तो उनके हृदय को बड़ा आघात पहुँचा। उन्होंने उद्धव को अपने मन की भावनाएँ और पीड़ा समझाने का प्रयास किया।

उनके मन से श्रीकृष्ण का ध्यान एक पल को भी नहीं हटता। वे उद्धव से अनुरोध करती हैं कि योग और ज्ञान की

शिक्षा उनको दें जिनका किसी से दृढ़ प्रेम-भाव नहीं है। हमारे मन, वचन और कर्म में तो श्रीकृष्ण दृढ़ता से समाए हुए हैं।

गोपियाँ उद्धव की योगपरक भक्ति को नहीं समझ पाने पर, उन पर व्यंग्य करती हैं। उनका उपहास भी करती हैं। ऐसा वह उद्धव का अपमान करने के लिए नहीं करतीं बल्कि यह उनके अविचल और निश्छल प्रेम को

पहुँची ठेस की प्रतिक्रिया हैं।

'अँखियाँ हरि दरसन की भूखी' , बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी', 'बिन गोपाल बैरिन भई कु जैं' गोपियों की इन सभी उक्तियों में प्रेममयी भक्ति भावना का प्रकाशन हुआ है। भ्रमरगीत में कविवर सूर की भक्ति भावना का भी दर्शन हो रहा है।

सप्रसंग व्याख्याएँ-

1. हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचननंदनन्दन सो उर,
यह दृढ़ करि पकरी॥
जागत, सोवत सपने सौंतुख
कान्ह कान्ह जकरी।
सुनतहि जोग लगत ऐसो
आलि ज्यों करुई ककरी॥
सोई व्याधि हमैं लै आए
देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर तिन्हैं लै दीजै,
जिनके मन चकरी॥

कठिन शब्दार्थ - हारिल = एक हरे रंग का तोते से मिलता-जुलता पक्षी जो हर समय पंजे में टहनी पकड़े रहता है। लकरी = लकड़ी, वृक्ष की टहनी। बच = वचन, वाणी। क्रम = कर्म, कार्य। नंदनंदन = श्रीकृष्ण। उर = हृदय। सौंतुख = साक्षात्। कई = कड़वी। ककरी = ककड़ी। व्याधि = झंझट, रोग। चकरी = चकई नाम का खिलौना, अस्थिर, चंचल।

सन्दर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित सूरदास के

पदों से उधृत है। इस पद में गोपियाँ उद्धव के ज्ञान और योग मार्ग को ग्रहण करने में अपनी असमर्थता दिखाते हुए कृष्ण के प्रति अपने अविचल प्रेम को प्रकट कर रही हैं।

व्याख्या-सूरदास जी कहते हैं कि उद्धव के योग संदेश को सुनकर गोपियां कहती है कि हमारे हरि अर्थात श्री कृष्ण तो हारिल पक्षी की लकड़ी के समान है। जिस प्रकार हारिल अपने पंजों में हरी लकड़ी दबाये रहता है। उसे कभी नहीं छोड़ता। उसी प्रकार भगवान कृष्ण हमारे हृदय में दृढ़ता से बसे हुए हैं। हम उसे कभी भी छोड़ नहीं सकती हैं। हम तो जागते-सोते' स्वप्न और प्रत्यक्ष अर्थात दिन-रात कृष्ण के नाम की ही रट लगाए में रहते हैं। गोपियां कहती है कि हे मधुप तुम्हारा निर्गुण ज्ञान और योग का यह संदेश तो हमें कड़वी ककड़ी के समान लगता है। निर्गुण के विषय में हमने ना ही तो पहले कभी सुना है और ना ही इसे कहीं देखा है। यह हमारे लिए एक व्याधि है जो तुम हमारे लिए लेकर आए हो। गोपियां उद्धव से कहती है कि हे उद्धव तुम अपना यह योग का संदेश उन लोगों को दो जिनके मन चकरी के समान हमेशा चलायमान रहते हैं,अर्थात अस्थिर और भ्रमित रहते हैं।

विशेष-

(i) पद में गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने दृढ़ प्रेम को प्रदर्शित करते हुए उद्धव के ज्ञान और योग का उपहास किया है।

(ii) कवि ने 'हारिल की लकड़ी' लोकोक्ति का बड़ा सटीक प्रयोग किया है।

(iii) सरल ब्रजभाषा में सूर ने मार्मिक भावनाओं का सफल प्रकाशन किया है।

(iv) पद में अनुप्रास, उपमा तथा पुनरुक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(v) विप्रलम्भ (वियोग) श्रृंगार की सफल योजना हुई है।

(vi) लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रभावशाली प्रयोग है।

2. हम तौ दुहुँ भाँति फल पायो।

जो ब्रजनाथ मिलैं तो नीको,

नातरु जग जस गायो।

कहँ वै गोकुल की गोपी

सब बरनहीन लघुजाती।

कँह वै कमला के स्वामी संग,

मिलि बैठीं इक पाँती।

निगमध्यान मुनिज्ञान अगोचर,

ते भए घोषनिवासी।

ता ऊपर अब साँच कहों

धौं मुक्ति कौन की दासी?

जोग-कथा, पा लागों ऊधो,

ना कहु बारम्बार।

सूर स्याम तजि और भजै

जो ताकी जननी छार॥

कठिन शब्दार्थ- दुहुँ भाँति = दोनों प्रकार से। ब्रजनाथ = कृष्ण। नीको = अच्छा। नातरु = नहीं तो। जस = यश। बरनहीन = अवर्ण, हीनवर्ण वाली। लघुजाती = छोटी जाति की, ग्वालिन। कमला = लक्ष्मी। इक पाँती = एक पंक्ति में, साथ। निगमध्यान = वेदों का अध्ययन या ज्ञान, अगोचर = अज्ञात, पहुँच से बाहर। घोष = गोपालकों की बस्ती। ता = उस। पालागौं = पैर लगती हूँ। तजि = त्याग कर। भजै = ध्यान करे। ताकी = उसकी। जननी = माता। छार = राख, धूल, तुच्छ।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि सूरदास के रचित पदों से लिया गया है। इस पद में बार-बार योग की चर्चा करने वाले उद्धव और उनके मित्र कृष्ण पर व्यंग्य करते हुए गोपियों ने मुक्ति पर भक्ति और प्रेम को भारी बताया है।

व्याख्या-गोपियां उद्धव को संबोधित कर कहती हैं कि हमें तो दोनों ही स्थितियों में लाभ ही लाभ है। यदि हमें भगवान श्रीकृष्ण मिल जाते हैं तो अच्छा है नहीं तो हमें उनका यश गाने का फल तो अवश्य प्राप्त ही होगा। अर्थात उनसे प्रेम और उनकी भक्ति करने से हमारा यश संसार में फैल जाएगा। गोपियां

कहती हैं कि हम गोकुल गांव की साधारण सी ग्वालिन है। हम वर्ण और जाति दोनों से ही हीन हैं, और भगवान श्री कृष्ण धन की देवी लक्ष्मी के स्वामी हैं, लेकिन फिर भी हमें भगवान श्री कृष्ण का सानिध्य प्राप्त हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण वेदों के ज्ञाता हैं, ध्यानस्त योगी है, ज्ञानी और मुनि भी उनके वास्तविक स्वरूप को जान नहीं पाए हैं। ऐसी भगवान श्रीकृष्ण का सानिध्य हमें प्राप्त हुआ है इससे गौरव की बात और क्या हो सकती है। आप जिस मुक्ति की बात कर रहे हैं अब बताइए कि वह मुक्ति किसकी दासी है। अर्थात गोपियां कहना चाहती हैं कि हे उद्धव आप तो हमें ध्यान योग के द्वारा संसार सागर से मुक्ति दिलाना चाहते हो लेकिन हमें तो श्री कृष्ण की भक्ति से ही मुक्ति की प्राप्ति हो जाएगी। गोपियां कहती हैं कि उद्धव हम आपके हाथ जोड़ती हैं, पैर पकड़ती हैं आप हमें यह निर्गुण का संदेश बार-बार मत दीजिए। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से कहते हैं कि जो व्यक्ति भगवान श्री कृष्ण को छोड़कर किसी और देव का ध्यान करता है, उसका जन्म ही निष्फल हो जाता है।

विशेष-

(i) गोपियों ने अपने तीखे व्यंग्यों और सहज तर्को से योग और ज्ञान पर भक्ति और प्रेम की श्रेष्ठता स्थापित की है।

(ii) 'भगवान भक्त के वश में हैं, इस उक्ति की गोपियों ने इस पद में कठिन परीक्षा ली है।

(iii) भक्ति की दृष्टि से भगवान का अनुग्रह और प्रेम ही सर्वोपरि है। मुक्ति उसके लिए एक तुच्छ वस्तु है। यह भाव इस पद का मूल विषय है।

(iv) 'ताकी जननी छार' कथन से गोपियों का उद्धव के प्रति क्षोभ प्रकट हो रहा है।

(v) भाषा साहित्यिक और लाक्षणिक है। शैली व्यंग्यात्मक तथा तार्किक है।

3. बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे।
वह मथुरा काजर की कोठरि
जे आवहिं ते कारे॥
तुम कारे, सुफलकसुत कारे,
कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छवि उपजत,
कमलनैन मनिआरे॥
मानहु नील माट तें काढ़े,
लै जमुना जाय पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी,
सूर स्याम-गुन न्यारे॥

कठिन शब्दार्थ- बिलग = बुरा, अन्यथा। जनि = मते, नहीं। काजर की कोठरि = काजल की कोठरी, दूषित या कलंकित करने वाला स्थान। आवहिं = आते हैं। ते = वे। सुफलकसुत = अक्रूर जो बलराम और कृष्ण को मथुरा लिवा ले गए थे। मधुप = भौंरा, रस लोभी। सँवारे = भौंरा जैसा, फूल-से-फूल पर मँडराने वाला। छवि = शोभा। कमलनैन = कमल जैसे नेत्र वाले कृष्ण। मनिआरे = मणि या रत्न जैसी दमक वाले। नील = एक पौधे से निकाला जाने वाला नीला रंग। माट = वस्त्र आँगने या धोने का बड़े मुँहवाला मिट्टी का बर्तन। काढ़े = निकाले। पखारे = धोए, साफ किए। ता गुन = उस गुण या कारण से। स्याम = साँवली। भई = हो गई है। कालिंदी = यमुना। गुन = गुण। न्यारे = सबसे अलग, अनोखे॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित सूर रचित सूरसागर के 'भ्रमरगीत' प्रसंग से लिया गया है। इस पद में गोपियाँ उद्धव के काले रंग पर कटाक्ष करते हुए मथुरावासियों के चंचल और विलासी स्वभाव का परिहास कर रही हैं।

व्याख्या-गोपियाँ योग और ज्ञान सिखाने आए उद्धव पर मधुर व्यंग्य करते हुए कह रही हैं-हे उद्धव! आप बुरा मत मानना। हमें तो ऐसा लगता है वह मथुरा नगरी काजल की कोठरी के समान है। वहाँ से निकलकर आने वाला

हर व्यक्ति काला ही होता है। आप काले हैं, बलराम और कृष्ण को बहकाकर ले गए वह अक्रूर भी काले थे। यह हमारे ऊपर मँडराता भौंरा भी काला है। लगता है यह भीमथुरा से ही आया है अथवा वह कृष्ण भी मथुरा से ही लाए गए थे। सच तो यह है कि वह रत्न जैसी कान्ति वाले कमल के समान नेत्रधारण करने वाले कृष्ण, मथुरा के काले लोगों में ही शोभा पाते हैं। वह उन्हीं के बीच रहने योग्य हैं। ऐसा लगता है जैसे, इन्हें नील के माट से निकाल कर यमुना में धोया गया है। इसी कारण यह यमुना भी साँवली हो गई है। उद्धव! आपके परममित्र उन श्रीकृष्ण के गुणों का कहाँ तक वर्णन करें। वे तो सबसे न्यारे हैं। विलक्षण चरित्र वाले हैं।

विशेष-

(i) उद्धव के श्याम वर्ण को लेकर गोपियों ने मथुरावासियों के तन और मन दोनों पर करारा व्यंग्य किया है।

(ii) "काजर की कोठरी' लोकोक्ति का सटीक प्रयोग करते हुए कवि ने क्षुब्ध गोपियों की मनोभावनाओं को उजागर किया है।

(iii) "तिनके संग.....मनियारे" पंक्ति में गोपियों ने कृष्ण के मथुरावास पर हृदयवेधी व्यंग्य प्रहार किया है। भाव यह है कि कृष्ण को ब्रज की गोरी और प्रेम में समर्पित सुन्दर गोपियाँ नहीं सुहाईं। उसे कुब्जा से सम्बन्ध जोड़ना अच्छा लगा। काले को काली ही भाई।

(iv) भाषा साहित्यिक ब्रज है। वर्णन शैली व्यंग्यात्मक और उपहासात्मक है।

(v) 'काजर की कोठरि' 'कारे' में श्लेष अलंकार है। 'कमल नैन' में उपमा अलंकार है।

4. अँखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची,
ये बतियाँ सुनी रूखी॥
अवधि गनत इकटक मग जोवत,
तब एती नहिं झूखी।

अब इन जोग सँदेसन ऊधो,
अति अकुलानी दूखी॥
'बारक वह मुख फेरि दिखाओ,
दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हुठि नाव चलायो,
ये सरिता है सूखी॥

कठिन शब्दार्थ -भूखी = अत्यन्त लालायित। रूपरस = सुन्दरतारूपी आनन्द। राँची = रँगी हुई, डूबी हुई। बतियाँ = बातें, उपदेश। रूखी = नीरस। अवधि = लौटकर आने का समय। गनत = गिनते हुए। इकटक = अपलक, टकटकी लगाए हुए। मग = मार्ग। जोवत = जोहते हुए, देखते हुए। एती = इतनी। झूखी = हुँझलाईं, खीझी, क्षुब्ध। जोग-सँदेसन = योग के सन्देशों से। अकुलानी = व्याकुल हैं। दूखी = दुखी हो रही हैं। दुख रही हैं। बारक = एकबार। फेरि = फिर से, दोबारा। दुहि = दुहकर। पय = दूध। पतूखी = पत्ते से बना दोना। सिकत = रेत, बालू। हठि = हठपूर्वक, अविवेक से। सरिता = नदियाँ, गोपियों के हृदय। सूखी = जलरहित॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित सूर रचित सूरसागर के भ्रमर गीत प्रसंग से लिया गया है। इस पद में गोपियाँ श्रीकृष्ण के उस रूप का दर्शन करना चाहती हैं, जिसमें वह पत्तों के दोनों में दूध दुहकर पिया करते थे।

व्याख्या-उद्धव द्वारा हठपूर्वक बार-बार गए योग साधना के सन्देश को सुनाए जाने पर गोपियाँ उद्धव विवेक पर तरस खाते हुए कहती हैं- हे उद्धव! हमारी आँखें प्रिय श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए लालायित हैं। इनकी भूख आपके नीरस योग और ज्ञान के उपदेशों से कैसे बुझ सकती है। कल तक जो आँखें श्रीकृष्ण के अनुपम स्वरूप के रस में डूबी रहती थी, वे आपके इन नीरस उपदेशों से कैसे सन्तुष्ट हो सकती हैं। जब हम श्रीकृष्ण के मथुरा से लौटने की

अवधि का एक-एक दिन गिन रही थीं। हमारी आँखें कटकी लगाए उनके आगमन के मार्ग को देख रही थीं, तब भी ये इतनी दुःखी नहीं थी, जितनी व्यथित आपका यह योग संदेश सुनकर हुई हैं। अब आप इन योग और ज्ञान के सन्देशों और उपदेशों को बन्द कीजिए। बस एक बार हमें हमारे प्राणप्रिय श्रीकृष्ण के उस मुख के दर्शन करा दीजिए। जिससे वह पत्तों के दोनों में दूध दुहकर पिया करते थे। हमें मथुराधीश, योगी और ज्ञानी श्रीकृष्ण नहीं चाहिए। हम तो उसी कृष्ण की आस लगाए बैठी हैं, जो गोपियों से हिलमिलकर रसमय क्रीड़ा और लीलाएँ किया करते थे। गोपियां कहती हैं कि हे उद्धव हम तो कृष्ण के वियोग में सूखी नदी के समान हैं और तुम हठ पूर्वक रेत में नाव चलाने का प्रयास कर रहे हो। अर्थात जिस प्रकार सूखी नदी में नाव नहीं चलती है उसी प्रकार तुम्हारे इस योग संदेश का भी हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं होने वाला है।

विशेष-

(i) "हरि दरसन की भूखी" कथन में गोपियों का एकनिष्ठ, अविचले प्रेम और मिलन की तड़प साकार हो रही है।

(ii) "कैसे रहें ..... रूखी।" पंक्ति में निर्गुण के आराधक योगियों और ज्ञानमार्गियों पर कटाक्ष किया गया है।

(iii) "दुहि पय पिवत पतूखी।" में ब्रज की गोप संस्कृति की हृदयस्पर्शी झाँकी है।

(iv) 'सिकत हठि नाव चलायो' में रेत में नाव चलाना' मुहावरा ही रूपान्तरण के साथ प्रयुक्त हुआ है।

(v) पद में भावसिक्त तर्को द्वारा गोपियों ने अपनी दयनीय मनोदशा का वर्णन किया है।

(vi) भाषा में प्रौढ़ता, साहित्यिकता और लोकांचल का मधुर स्पर्श है।

5. निर्गुन कौन देस को बासी?

मधुकर! हँसि समुझाय,

सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी॥

को है जनक, जननि को कहियत,

कौन नारि, को दासी?

कैसो बरन, भेस है कैसो,

केहि रस में अभिलासी॥

पावैगो पुनि कियो आपनो

जो रे! कहैगो गाँसी।

सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो

सूर सबै मति नासी॥

कठिन शब्दार्थ -निर्गुन = गुणरहित, निराकार ईश्वर। बासी = निवासी, रहने वाला। मधुकर = भौंरा। सौंह दै = सौगन्ध दिलाकर। बुझति = पूछती हूँ। साँच = सच। हाँसी = हँसी, मजाक। जनक = पिता। जननि = माता। नारि = पत्नी। बरन = रंग। भेस = वेशभूषा। अभिलासी = चाहने वाला, रुचि रखने वाला। गाँसी = कपटपूर्ण बात, झूठ। वै = होकर। ठग्यो सो = ठगा हुआ सा, चकित। मति = बुद्धि, चतुराई। नासी = नष्ट हो गई, व्यर्थ हो गई।

सन्दर्भ तथा प्रसंग -प्रस्तुत पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित महाकवि सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत प्रसंग' के पदों से लिया गया है। इस पद में गोपियाँ उद्धव से निर्गुण ब्रह्म का परिचय पूछकर उनसे परिहास कर रही हैं।

व्याख्या-निर्गुण निराकार की उपासना और योग साधना का उपदेश देने आए उद्धव से पीछा छुड़ाने के लिए गोपियों ने निर्गुण के परिवार की सारी जानकारी मांग ली। उन्होंने कहा-"हे उद्धव ! हमें आपका उपदेश स्वीकार है। इस निर्गुण से मन लगाने को तैयार हैं परन्तु उसका पूरा परिचय तो हमें बताइए। वह आपका निर्गुण किस देश का रहने वाला है। हे मधुकर ! (उद्धव) बुरा न मानो हमें हँस कर बताओ। हम तुम से हँसी नहीं कर रहीं। सचमुच ही हम उस

निर्गुण से परिचित होना चाहती हैं। बताओ उस निर्गुण का पिता कौन है? उसकी माता कौन है? उसकी पत्नी का नाम क्या है और उसकी दासी कौन है, उसका रूप-रंग और वेशभूषा कैसी है, यह भी बताओ कि उसे किस रस में रुचि है? परन्तु यह ध्यान रखना कि यदि तुमने झूट या कपटपूर्ण बातें कही तो उसका फल तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा।" गोपियों की इन बातों या प्रश्नों को सुनकर उद्धव मौन हो गए। उनको उत्तर देते नहीं बना, निर्गुण ब्रह्म के माता, पिता, दासी और रूप-रंग का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ज्ञानी उद्धव साधारण सी गोपियों के मुख से ऐसे प्रश्न सुनकर अपने आप को ठगा सा अनुभव करने लगा और मौन हो गया। गोपियों के प्रश्न का कोई उत्तर उद्धव के पास नहीं था।

विशेष-

(i) ज्ञान और तर्कशक्ति में गोपियाँ उद्धव के सामने कहीं नहीं ठहरतीं। किन्तु उनको सहज जिज्ञासाओं का समाधान कर पाना, ज्ञान और तर्क से परे है। प्रेम के क्षेत्र में तर्क का स्थान नहीं है और ज्ञानी तथा तार्किक व्यक्ति प्रेम के भावभीगे क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर पाता है। कवि ने इस पद द्वारा ज्ञान और योग पर प्रेम और भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है।

(ii) इस प्रसंग के आयोजन द्वारा सूरदास जी की काव्य प्रतिभा संवेदनशीलता और भक्ति भावना गोपियों के माध्यम से व्यक्त हुई है।

(iii) साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग है। प्रस्तुतीकरण की शैली व्यंग्यात्मक, परिहासात्मक और रोचक है।

(iv) पद में अनुप्रास अलंकार है।

6. बिन गोपाल बैरिन भई कुनैं॥
तब ये लता लगति अति सीतल,
अब भई विषम ज्वाल की पुंजें॥
वृथा बहति जमुना, खग बोलत,
वृथा कमल फूलै अलि गुंजै।

पवने पानि घनसार संजीवनि दधिसुत
किरन भानु भई भुजें॥
ए, ऊधो, कहियो, माधव सों विरह कदन
करि मारत लुजें॥
सूरदास प्रभु को मग जोवत,
अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजै॥

कठिन शब्दार्थ- बैरिन = शत्रु, कष्टदायिनी। कुंजें = वृक्षों का समूह। विषम = भयंकर। ज्वाल अग्नि। पुंजें = समूह। बृथा = व्यर्थ। खग = पक्षी। अलि = भौंरा। गुंजें = गुंजार करते हैं। पानि = पानी। घनसार = कपूर। संजीवनि = बादल (संजीवनी = जीवनदायिनी)। दधिसुत = चन्द्रमा। भानु = सूर्य। भई = होकर, बनकर। भुजें = जला रही हैं। माधव = श्रीकृष्ण। कदन करि = मारकर, घोर कष्ट देकर। लुजें = अशक्त। मग = मार्ग, आगमन। जोवत = देखते हुए। बरन = वर्ण, रंग। गुंजें = गुंजा या रत्ती, जिससे पहले सोना और रत्न तोले जाते थे। इसका रंग लाल और रूप आँख जैसा होता था।

सन्दर्भ तथा प्रसंग - यह पद हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि सूरदास रचित पदों से लिया गया है। गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में दु:खी होकर उद्धव को बता रही हैं कि सारी सुखदायिनी वस्तुएँ अब उनको कष्ट देने वाली लग रही हैं।

व्याख्या- गोपियाँ उद्धव से कहती हैं- हे उद्धव! आप क्या जाने कि कृष्ण के वियोग में हमारा जीवन कितना कष्टमय हो गया है। आज श्रीकृष्ण के पास न होने से ब्रज के वनों की वे कुंज जहाँ हमने प्रिय कृष्ण के साथ विहार किए थे, शत्रुओं के समान हमें अप्रिय और कष्टदायिनी लगती हैं। जो लताएँ तब तन-मन को शीतलता प्रदान किया करती थीं, अब भयंकर अग्नि के समूह के समान जला देने वाली लग रही हैं। अपने स्वच्छंद प्रवाह में बहती यमुना नदी, कलरव करते पक्षी, कमल पुष्पों का खिलना और पुष्पों पर भौंरों की

गुंजार, यह सारे दृश्य हमें व्यर्थ प्रतीत हो रहे हैं। इन्हें देखकर हमारा मन अब हर्षित नहीं होता। वायु, जल, कपूर, बादल और चन्द्रमा की किरणें, ये सभी शीतलता प्रदान करने वाली वस्तुएँ आज प्रचण्ड सूर्य के समान हमें जलाने वाली बन गई हैं। हे उद्धव! आपसे हमारा अनुरोध है कि आप मथुरा जाकर निर्मोही कृष्ण से कहना कि उनके वियोग ने हमें प्राणान्तक कष्ट देकर विकलांग-सा बना दिया है। हम जीवित ही, मृततुल्य हो गए हैं। उन्हें बताना कि उनके आगमन के पथ को एकटक देखते रहने के कारण, हमारी आँखें गुंजा के समान लाल होकर दु:ख रही हैं।

विशेष-

(i) गोपियों की विरह व्यथा का मार्मिक वर्णन हुआ है। विरह व्यथित नारी के जीवन में सुखदायक वस्तुएँ भी दुखदायक बन जाती हैं, इस काव्य परम्परा को कवि सूर ने इस पद में निपुणता से निभाया है।

(ii) 'लगति अति सीतल' तथा 'भानु भई भुजें' में अनुप्रास अलंकार हैं।

(iii) वियोग श्रृंगार रस की हृदयस्पर्शी योजना है।

(iv) भाषा साहित्यिक ब्रज है।

(v) परम्परागत शैली में विरह वर्णन किया है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg